''माध्यमिक स्तर की अर्न्तमुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व की बालिकाओं के समायोजन की स्थिति का अध्ययन''

*सुनीता यादव
**डॉ. रीटा बिष्ट

शोध सार :–

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ ऐसी विशेषताएं होती है, जिनके आधार पर वह परिस्थिति के प्रति विभिन्न प्रतिक्रियाएं करता है इन्ही प्रतिक्रियाओं को हम एक शब्द में व्यक्तित्व कहते हैं। व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जाता है कभी यह व्यवहार की व्याख्या करता है कभी मानसिक क्षमता की। कभी इसे समायोजन करने की क्षमता के रूप में प्रयोग किया जाता है।

एक अच्छी शैक्षिक संस्था वह है जिसमे प्रत्येक छात्र को सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण उपलब्ध करवाया जाता है, जहाँ सभी छात्रों को सीखने के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध करवाए जाते है। जहां सीखने के लिए अच्छे बुनियादी ढांचे और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना जैसे मूलभूत सिद्धान्तों पर जोर दिया गया है। जीवन कौशल जैसे आपसी संवाद सहयोग, सामूहिक कार्य और लचीलापन पर ध्यान दिया गया है।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व व समायोजन की स्थिति का अध्ययन करना है। इस शोध हेतु शोधकर्ती द्वारा अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है न्यायदर्श के अन्तर्गत जयपुर जिले की माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी स्कूलों की छात्राओं को लिया गया है।

मुख्य शब्दावली :– अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, व्यक्तित्व संज्ञानात्मक समझ।

परिचय :– बालक के व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया शिक्षा है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक चलती रहती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि का समग्र केन्द्र बिन्दु शिक्षा प्रणाली को रटने की पुरानी प्रथा से अलग वास्तविक समझ और ज्ञान के विकास की ओर ले जाना है। शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और इक्कीसवीं शताब्दी के मुख्य कौशलों से सुसज्जित करना है।

जन्म काल से ही बालक के व्यक्तित्व का विकास उसके वंशानुक्रम और पर्यावरण पर निर्भर करता है। बालक के वंशानुक्रम के अन्तर्गत बालक के स्वास्थ्य की दशा में बालक की वृद्धि और बालक का स्वभाव आता है।

युग ने अपनी पुस्तक Psychological Types में व्यक्तित्व के दो प्रकार बताएं है। अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व/अन्तर्मुखी व्यक्तित्व उन व्यक्तियों का होता है जो स्वयं की ओर केन्द्रित रहते हैं। इनके गुण स्वभाव आदते ब्राह्म रूप से दिखाई नहीं देते, ऐसे व्यक्ति संकोची लज्जाशील, एकान्तप्रिय, जल्दी–घबराने वाले तथा आत्म केन्द्रित

होते हैं। इनके कार्य करने की क्षमता अधिक होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन बालको की विशिष्ट क्षमताओं, स्वीकृति एवं उनकी पहचान तथा उनके विकास हेतु प्रयासों पर बल दिया गया है। अन्तर्मुखी बालक किसी कार्य को करने से पूर्व अत्यन्त मनन व चिन्तन करते हैं।

दुसरी प्रवृति के व्यक्ति बर्हिमुखी होते हैं बहिर्मुखी व्यक्तियों की रुचि बाह्य जगत में होती है जिसके कारण वे बाह्य जगत को अधिक महत्व देते है। ये व्यवहारिक होते हैं तथा सक्रिय रहना पसंद करते हैं। वे व्यवहार में कुशल, चिंतामुक्त, सामाजिक, आशावादी, साहसी तथा लोकप्रिय प्रवृत्ति के होते हैं।

आज दुनिया निरन्तर और निरन्तर परिवर्तन में है। इन परिवर्तनों का क्षेत्र बढ़ता जा रहा है और इसलिए मानव जीवन के समक्ष कई और चुनौतियाँ आएगी। परिणामस्वरूप समायोजन समस्या गम्भीर एवं विकट हो जाएगी। इसलिए विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व के लोगों और उनके समायोजन की प्रक्रिया को समझना आवश्यक होगा।

समायोजन व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच अन्तः क्रिया का परिणाम है इस प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर पाता है या अपने वातावरण में परिवर्तन का प्रयास करता है। वह प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अपने वातावरण में परिवर्तन का प्रयास करता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियां आती रहती है जिनका उसे समय–समय पर सामना करना पड़ता है।

व्यक्तित्व का समायोजन पर भी प्रभाव पड़ता है। अन्तःर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति निराशावादी व्यक्तित्व के कारण हार मानकर अपना संतुलन खो बैठते हैं और तनाव के शिकार बने रहते है। ये लोग असफलता मिलने पर निराशा, असंतोष, मानसिक तनाव और कुण्ठा से ग्रसित हो जाते हैं। ये लोग अपने संकोची स्वभाव के कारण, अपने अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के कारण दूसरे लोगों से घुलना मिलना पसंद नहीं करते है। ये लोग भविष्य के बारे में असहज एवं चितिंत रहते है। सामाजिक सम्बन्धों से दूर रहते है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व सामाजिक सम्बन्धों एवं सामाजिक क्रियाकलापों पर विशेष ध्यान देते हैं। इनमें प्रायः सृजनात्मकता का गुण पाया जाता है। इनकी बुद्धि लब्धि भी उच्च होती है। ये प्रत्येक कार्य को नवीन तरीके से करते हैं। ये लोग लोगों की भावनाओं एवं अभिरूचि को अच्छी तरह समझते हैं। इनका प्रबन्धन अन्तर्मुखी व्यक्तित्व से अच्छा होता है। वह किसी भी कार्य को करने में अपने साथी को प्रोत्साहित करता है। परन्तु अन्तर्मुखी कोई भी कार्य व्यक्तिगत रूप से करना ही पसन्द करता है इसलिए वह न तो अधिक लोगों से बात करना पसंद करता है और न ही अपने कार्य में दूसरों की मौजूदगी को पसन्द करता है।

ट्रिम स्मिथ के शोध निष्कर्ष भी यह संकेत करते हैं कि बहिर्मुखी किसी भी कार्य को मिलजुलकर करते है जिससे उनका कार्य अन्तर्मुखी व्यक्ति की अपेक्षा अच्छा होता है।

अतः बालक का व्यवहार कैसा होगा यह परिवार पर निर्भर करता है। परिवार के सदस्य अन्तर्मुखी है तो बालक भी अर्न्तमुखी होगें एवं परिवार के सदस्य बहिर्मुखी है तो बालक बालिकाएं भी बहिर्मुखी होंगे।

अग्रवाल एवं अग्रवाल ने (2006) में अपनी पुस्तक में बताया कि स्त्रिया स्वभाववश बहिर्मुखी होती है। किसी समस्या के समाधान में वें समस्या के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो पहलुओं को लेकर चलती है अन्तर्मुखी बालिकाएं अपने आप में मस्त रहती है एवं सांसारिक बातों से उनको कोई सरोकार नहीं होता है तथा दूसरों से कम बोलना व कम मिलना पसंद करती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

(1) शहरी क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राएँ अन्तर्मुखी– बहिर्मुखी व्यक्तित्व एवं समायोजन स्थिति की स्तर ज्ञात करना।

(2) ग्रामीण क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व एवं समायोजन की स्थिति ज्ञात करना।

(3) शहरी क्षेत्र की माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व एवं समायोजन में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

(4) ग्रामीण क्षेत्र की माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व एवं समायोजन में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि :– प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा शेखावटी अंचल के माध्यमिक स्तर की अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व की बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जायेगा क्योंकि यह एक सर्वोत्तम विधि है। यह दत्तों का संकलन, संग्रहण, सारणीयन, वर्गीकरण, मूल्यांकन, सामान्यीकरण एवं व्याख्या तुलना व मापन भी करती है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा स्वयं उपस्थित होकर माध्यमिक स्तर की छात्राओं से सम्बन्धित दत्त संकलन किया जाएगा।

न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध न्यादर्श का चुनाव जयपुर जिले की माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी स्कूल की छात्राओं का किया जाएगा। इस शोध कार्य के लिए दत्त संग्रहण हेतु 900 छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया जायेगा

निष्कर्ष :–अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की बालिकाएं अपने अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के कारण अन्य छात्रों से अधिक घुलना मिलना पसंद नहीं करते है जिससे उनमें संकोच व झिझक बनी रहती है। ईक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा का जरूरी उद्देश्य अच्छे चिंतनशील बहुमुखी प्रतिभावाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना है। यह एक व्यक्ति को एक या एक से अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में गहन स्तर पर अध्ययन करने में सक्षम बनाती है। नई शिक्षा नीति में शिक्षक शिक्षा के अन्तर्गत विद्यार्थियों की प्रतिभाओं और रूचियों को पहचान कर इन्हें बढ़ावा देने के तरीके शामिल है जिससे अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की संकोची प्रवृत्ति दूर हो सकें तथा वे भी साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिन्तन और रचनात्मक कल्पना शक्ति से परिपूर्ण हो सकें।

***शोधार्थी**
****यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलोजी**
जयपुर (राज.)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्लू बी॰ एस॰ (1956) शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) कार्रवाई का कार्यक्रम
3. अग्रवाल जे॰ सी॰ (1995) शैक्षिक मनोविज्ञान की अनिवार्यताएं
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) कार्रवाई एवं कार्यक्रम
5. पाण्डेय R.S. (2007) शिक्षा मनोविज्ञान
6. शर्मा आर. ए. शिक्षा और मनोविज्ञान
7. कपिल एच॰ के॰ (2009) व्यवहार विज्ञान में अनुसंधान